16.05 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—*contd.*

(ii) FIRE IN A PASSENGER-COACH ON NORTH-EAST FRONTIER RAILWAY

श्री मधु लिमये (मोंघिर) : मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर रेलवे मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

> "उत्तर -पूर्वी सीमांत रेलवे की 24 डाउन पैसेंजर गाड़ी के एक डिब्बे में 27 फरवरी, 1965 की रात को आग लगना, जिस में 38 व्यक्ति घायल हुए ।"

रेलवे मन्त्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : 28-2-1965 को रात में लगभग 3 बज कर 47 मिनट पर, जब 24 डाउन सिलिगुड़ी-मनिहारीघाट सवारी गाड़ी पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के कटिहर सिलिगुड़ी मीटर लाइन खण्ड पर सोर्नली और डंडखोरा स्टेशनों के बीच जा रही थी, तो यह देखा गया कि उसके तीसरे दर्जे और पोस्टल वान के मिले-जुले डिब्बे में आग लग गयी है । यह डिब्बा इंजन से पीछे तीसरा डिब्बा था ।

गाड़ी खड़ी कर दी गयी और गाड़ी में आग बुझाने के लिए जो उपस्कर मौजूद था, उसकी मदद से आग बुझाने की कोशिश की गयी ।

चूंकि आग बुझाने के उपलब्ध उपस्करों से आग न बुझाई जा सकी, इसलिए गाड़ी पहले तीन डिब्बों के साथ इंजन डंडखोरा लाया गया जहां आग बुझायी गयी और जिस डिब्बे में आग लगी थी उसे गाड़ी से अलग कर दिया गया । इसके बाद गाड़ी के बाकी डिब्बे डंडखोरा लाये गये और एक घंटा रुके रहने के बाद गाड़ी वहां से रवाना हुई ।

तीन मुसाफिरों को मामूली चोटें आयीं । उनकी वहीं मरहम-पट्टी की गयी और उन्हें अपनी यात्रा जारी रखने की अनुमति दे दी गयी ।

इस दुर्घटना के कारण की जांच करने का आदेश दिया गया है ।

श्री मधु लिमये : उस गाड़ी में चेन खींचने के लिए जो व्यवस्था थी, क्या वह ठीक व्यवस्था थी और क्या चेन खींची गई थी ?

डा० राम सुभग सिंह : चेन खींची गई थी, ऐसी बात प्रकाशित की गई है । और उस में व्यवस्था है । अभी हमारे आफिसर ने वहां के चीफ आपेरेटिंग सुपरिन्टेंडेंट से बातें कीं, मगर उन्होंने कहा कि हम पता लगा रहे हैं, निश्चित पता नहीं कि अखबारों में प्रकाशित खबर कहां तक सही है ।

श्री मधु लिमये : क्या उस लाइन में चेन निकालने का कोई हुक्म दिया गया था?

डा० राम सुभग सिंह : नहीं दिया गया था । जो हुक्म है, वह पूरी तरह से उस लाइन पर जारी है ।

श्री रामसेवक यादव (बारबंकी) : क्या मंत्री महोदय ने उस लाइन पर चेन खींचने की व्यवस्था को समाप्त करने के लिए आदेश दिये थे, जिसके फलस्वरूप में उस में चेन नहीं था और इसी लिए इतना नुकसान हुआ; यदि हां, तो इस तरह से जो नुकसान हुआ, उस का तख़मीना क्या है ?

डा० राम सुभग सिंह : कोई नया आदेश नहीं दिया गया ।

श्री मधु लिमये : कब दिया गया था ? नया नहीं, तो पुराना आदेश कब दिया गया था ?

डा० राम सुभग सिंह: कोई आदेश नहीं है ।

श्री बागड़ी (हिसार) : मैं माननीय रेल मंत्री से यह जानना चाहूंगा कि आग लगने के कितनी देर बाद वह बुझी और जिस सवारी डिब्बे में आग लगी, क्या उस में ऐसा कोई सामान था, जिस में आग लग सकती थी; यदि हां, तो उस को सवारी डिब्बे में ले जाने का क्या कारण था ?

डा० राम सुभग सिंह : जहां पर आग लगी, वहां आग बुझाने का प्यत्न किया गया । चूंकि आग नहीं बुझी, इस लिए उस डिब्बे को नजदीकी स्टेशन, डंडखोरा, पर ले जा कर आग बुझाई गई । उस डिब्बे में क्या सामान था या कोई आग लगने लायक सामान था, बगैर जांच की पूरी रिपोर्ट आए, मेरे लिए यह कहना मुनासिब नहीं है ।

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, इस में मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । मैं आप से नम्र निवेदन करूंगा कि जो ध्यान-आकर्षण प्रश्न, है, उसमे अगर दो तीन बुनियादी बातें आ जायें, तब तो उस का कोई फायदा है, वर्ना कोई फ़ायदा नहीं है । मुलजिम कौन था, उसके मालूम न होने की बात तो मानी जा सकती है, लेकिन आग कैसे लगी, वहां पर क्या चीज थी, जिस के कारण आग लगी, कितने समय के बाद आग बुझाई गई, इन सवालों का जवाब तो मिलना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य इस बात पर भी विचार करें कि जब ध्यान-आकर्षण की सूचना दीप्जाती है, तो हम उस को दो तीन दिन में लाने की कोशिश करते हैं । लेकिन अगर सरकार यह खयाल करे कि पहले तहकीकात हो जाये, सारा पता लग जाये, तब मेम्बरों को जवाब दिया जाये, तो फिर कालिंग एटेन्शन नोटिस की अरजेंसी खत्म हो जायेगी । जब इस की तहकीकात हो जायेगी, तब माननीय सदस्य और बातें पूछ सकते हैं !

श्री बागड़ी : आग बुझाने में कितना समय लगा ?

अध्यक्ष महोदय : इस वक्त उन को पता नहीं है ।

डा० राम मनोहर लोहिया—श्री ए० पी० शर्मा ।

श्री अ० प्र० शर्मा (बक्सर) अभी माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि जो तीन आदमी घायल हुए, उनकी मरहम-पट्टी कर के उन को छुट्टी दे दी गई, लेकिन अखबारों से मालूम हुआ है कि जो ३८ आदमी घायल हुए, उन में से पांच आदमी कटिहर रेलवे डिवीजनल हास्पिटल में एडमिट किए गये और बाकी को छुट्टी दे दी गई । मैं यह जानना चाहता हूं कि जिन आदमियों को हास्पिटल में एडमिट किया गया, क्या उन को अधिक चोट आई है । उन की हालत क्या है ?

डा० राम सुभग सिंह : इसका पता लगाया गया है । अखबारों में जो खबर प्रकाशित हुई वह सही नहीं है और उसका खंडन अखबारों में भेज दिया गया है । सम्भव है वह अभी प्रकाशित हो जाये ।

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : क्या मंत्री महोदय यह विश्वास दिलायेंगे कि इसके पीछे विदेशी तत्वों का हाथ तो नहीं है ? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि जांच कब तक पूरी हो जाएगी और कब तक इसकी रिपोर्ट हमारे सामने आ जाएगी ?

डा० राम सुभग सिंह : जैसा बताया गया है जांच का आदेश दे दिया गया है और जो बात प्रश्नकर्त्ता महोदय ने रखी है वह भी जांच कमेटी को भेज दी जाएगी ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : कब तक रिपोर्ट आ जाएगी ?

डा० राम सुभग सिंह : 20—25 दिन के पहले पहले आ जाएगी ।

Shri Subodh Hansda (Jhargram): Since the bogie was a composite one, RMS—*cum*-third class passenger bogie, was there any damage to postal property?

Dr. Ram Subhag Singh: There is no report about it. It will be known when detailed reports are received. The telephonic report that I have received does not indicate any damage to the RMS compartment.

श्री बूटा सिंह (मोगा) : 1963 के मुकाबले 1964 में रेल दुर्घटनाओं की संख्या बहुत अधिक है । मैं जानना चाहता हूं कि ऐसी रेल दुर्घटनाओं की जांच के लिए कोई ज्यूडिशल कमिशन नियुक्त किया जाएगा या यह महकमाना तौर पर ही कारंवाई की जाएगी?

डा० राम सुभग सिंह : यह अलग प्रश्न है । जो ज्यादा दुर्घटनाओं की बात बताई गई है वह इस माने में सही नहीं है कि बेशक पहले ऐसी दुर्घटनाओं का जिन में सवारी गाड़ियों की टक्कर हुई आंकड़ा 24 था और अब 30 है लेकिन ट्रली वगैरह से जो एक्सीडेंट हुए हैं उन में से कुछ में किसी व्यक्ति की मृत्यु नहीं हुई है । इस लिहाज से 1964 में बहुत कम दुर्घटनायें हुई हैं ।

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद): मेरा भी नाम था।

अध्यक्ष महोदय : मैं ने आपको बुलाया भी था ।

16.12 hrs.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS—*Contd.*

Mr. Speaker: The hon. the Prime Minister.

The Prime Minister and Minister of Atomic Energy (Shri Lal Bahadur Shastri): Mr. Speaker, Sir, the discussion on the President's Address was a prolonged one and it was but natural that almost every member who spoke made a reference to the language problem. No doubt, the language problem assumed a serious proportion during the last one month and it took a sudden turn for the worst, especially in the State of Madras. The violence committed there was something unimaginable. A number of people were killed, murdered and there were lootings, burnings and other forms of violence. I must say that it was most regrettable and deplorable.

Shri Hiren Mukerjee suggested that a new chapter should be opened and we might, perhaps, forget it and ignore it. I can understand the students doing something which was wrong just at the spur of the moment. They might have taken part—and they did take part—in some of these activities. But, as I said, one could understand and take a lenient view of things in their case; but there is no doubt that quite a large number of anti-social elements participated in it.

Shri Maurya (Aligarh): Including Shri Subramaniam.

अध्यक्ष महोदय : आप जरा सुनिये ।

Shri Lal Bahadur Shastri: They were responsible for murders and violence. I do not think that we can ignore those who took part in arson, looting and murders. If they are left alone, unchecked and unpunished, it would lead to a very bad situation and it might become almost impossible for our society to function peacefully. It is, therefore, necessary that the law should take its own course in their case. I have had talks with the Chief Minister of Madras and I do think that he will try to do whatever is best in the present circumstances.